



## SHRI YADLA GOPALA RAO

Shri Yadla Gopala Rao is a renowned artist especially in the art of Padya Natakam (poetic drama). He proved his worth in singing the "Padyams" for mythological characters. He is widely recognized across India for his role of "Nakshatraka" in "Satya Harischandra" poetic drama. He is a legend in mythological Play Segment.

1. Born on 5th May, 1950 as the son of a small farmer in a remote village named Mandarada in the backward district Srikakulam in Andhra Pradesh, Shri Rao studied up to higher secondary level. In the school anniversary function, he got recognition for his female characters in social, mythological and message oriented dramas. In his teen age, he had to walk 18 kms to learn this art of singing Padyams with the guidance of a teacher (Guru).

2. Shri Rao sacrificed all his time for this pivotal artistic process and acted 265 days per year in acting as "Sri Rama", "Narada", "Sri Krishna" and "Nakshatraka" alike. His popular role of Nakshatraka in 'Satya Harischandra' is unique and quite heart touching. Wonder like Tajmahal, Nakshatraka being minute role, he almost made the character of "Nakshatraka " as the hero of the drama with his meticulous timing of vocal delivery of dialogue and melodious tone. He with his scintillating performance has given alone five thousand stage shows in a span of 50 years.

3. Shri Rao produced and directed "Satya Harishandra" drama as a complete poetic film with the famous mythological stage artists by investing lacks of rupees so as to enable the future generation treat this great art as a living art. He is serving this noble field by making financial help to many poor and old artists. He contributes a definite amount every month without fail through art organizations for the artists. He donated a large amount to construct "Kalapranganam" in the Campus of High School of Mandarada.

4. Shri Rao is the recipient of numerous awards and honours. Titles like "Kaliyuga Nakshatraka" , "Gana Kala Prapoorna", "Abhinava Srikrishna", "Amrutha Ramudu"; " Nata Savyasachi"; "Kalavishista"; "Sangeeta Nata Chakravarthy"; "Kalavisarada"; "Pouranika Nataka Brahma"; were his honours and achievements in this art field over the years. When he completed 50 years in this art format, he was felicitated by Tanikella Bharani with "Kanakabhishekam" and released a "Look Worthy Sovenier" for his sincere and honest service to poetic drama.





## श्री यड्ल गोपाल राव

श्री यड्ल गोपाल राव विशेषकर पद्य नाट्यकला के एक प्रख्यात कलाकार हैं। उन्होंने पौराणिक पात्रों के लिए 'पद्यम' गायन में अपनी प्रतिभा सिद्ध की। उन्हें पूरे भारत में 'सत्य हरिश्चंद्र' काव्यात्मक नाटक में 'नक्षत्रक' की भूमिका के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है। वह पौराणिक नाटक के क्षेत्र की एक विभूति हैं।

1. उनका जन्म 5 मई, 1950 को आंध्र प्रदेश के पिछड़े जिले श्रीकाकुलम के मंदराडा नामक एक सुदूर गांव के एक छोटे से किसान के पुत्र के रूप में हुआ। श्री राव ने उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त की। अपने स्कूल के स्थापना समारोह में, उन्हें सामाजिक, पौराणिक और संदेश युक्त नाटकों में महिला पात्र के रूप में पहचान प्राप्त हुई। अपनी किशोरावस्था में उन्हें अपने गुरु के सान्निध्य में पद्यम गायन कला सीखने के लिए 18 किलोमीटर पैदल चलना पड़ता था।

2. श्री राव ने अपना पूरा समय इस प्रमुख कला को समर्पित कर दिया और वर्ष के 265 दिन श्रीराम, नारद, श्रीकृष्ण और नक्षत्रक का अभिनय किया। सत्य हरिश्चंद्र में नक्षत्रक की उनकी लोकप्रिय भूमिका अनूठी और बहुत ही मर्मस्पर्शी है। नक्षत्रक की उनकी अद्वितीय भूमिका ताजमहल की तरह आश्चर्यजनक है। उन्होंने अपने अवसर अनुकूल संवादों और मधुर धुन से नक्षत्रक को नाटक का नायक बना दिया। अपने शानदार अभिनय के साथ उन्होंने 50 वर्ष के दौरान अकेले ही 5000 मंच प्रदर्शन किए हैं।

3. श्री राव ने लाखों रुपये निवेश करके प्रसिद्ध पौराणिक मंच कलाकारों के साथ सत्य हरिश्चंद्र नाटक को एक काव्यात्मक फिल्म के रूप में बनाया और उसे निर्देशित किया है, ताकि आने वाली पीढ़ियां इस महान कला को एक जीवंत कला के रूप में अपना सकें। वह अत्यंत गरीब और बूढ़े कलाकारों की आर्थिक मदद करके इस नेक कला की सेवा कर रहे हैं। वह कला संगठनों के जरिए कलाकारों के लिए निरंतर हर महीने एक निश्चित राशि का योगदान करते हैं। उन्होंने मंदराडा के उच्च विद्यालय परिसर में ''कल्परंगनम'' के निर्माण के लिए विशाल धनराशि दान में दी है।

4. श्री राव को कई पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं। उन्हें इस कला क्षेत्र में वर्षों के दौरान 'कलियुग नक्षत्रक', 'गण कला परिपूर्ण', 'अभिनव श्रीकृष्ण', 'अमृता रामुडु'; 'नट सव्यसाची'; 'कलाविशिष्ट'; 'संगीत नट चक्रवर्ती'; 'कलाविशारद'; 'पौराणिक नाटक ब्रह्मा' उपाधियों से विभूषित किया गया है। इस कला क्षेत्र में 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर, उन्हें तनिकेल्ला भरनि द्वारा 'कनकभिषेकम' के साथ सम्मानित किया गया और काव्य नाटक के प्रति उनकी निष्ठा और सच्चे प्रयासों के सम्मानस्वरूप 'लुक वरदी सोवनियर' जारी किया गया।